P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6 * ISSUE-5 * (Part-1) January- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

मिथिला के लोक कलाओं में 'राजा सल्हेस' के कथानकों का चित्रण

राखी कुमारी
सहायक प्राध्यापिका,
छापाकला विभाग,
कला एवं शिल्प महाविद्यालय,
(पटना विश्वविद्यालय)
पटना, भारत

सारांश

मिथला के लोक चित्रों की पेरणा का आधार मुख्य रूप से धार्मिक है। विवेच्य क्षेत्र में तरह–तरह के धार्मिक विश्वास को सम्मिलित किया गया है। यह सिलसिला पौराणिक कथाओं तक है। मिट्टी की दीवारों पर अंकित किये गये दृश्य–चित्र किताबों की तरह है जो कि एक दृश्य–शिक्षा का स्वरूप है। जिसमें कोई भी ऐतिहासिक, पौराणिक और लोक–कथाओं आदि को पढ़ सकता है।

इन्हीं लोककथाओं म एक लोक कथा है 'राजा सल्हेस' की जिनकी लोककथा के विभिन्न दृश्यों का भितिचित्रण सम्पूर्ण मिथिला में चित्रित करने की परम्परा है। खासकर सामान्य वर्ग की जातियों में इसकों चित्रित करने का प्रचलन जयादा है। लोग इनकों (सल्हेस) भगवान की तरह पूजते है। उच्च जातियों में इनकी पूजा एंव चित्रण का प्रचलन नहीं है क्योंकि उनका मानना है कि ये सामान्य जाति यानी दुसाध के देवता है। लोगों का मानना है कि जहाँ पर इनका चित्रण होता है, वहाँ जंगली जानवर हमला नहीं करते है और इनकी जय–जयकार करने से वे भाग जाते है। अतः इनका चित्रण गौशाला (जहाँ जानवरों को रखा जाता है) तथा घर की बाहरी दीवारों पर चित्रण की परम्परा है।

मुख्य शब्द : भित्ति चित्रण, मांगलिक, पौराणिक, दुष्प्रभाव, योगिनियो, मतावलम्बी, नैमिषारण्य, गहबर।

प्रस्तावना

प्रत्येक देश, प्रांत या नगर की चित्रकला उस स्थान के सामाजिक, धार्मिक और राजनैतिक जीवन को प्रकाश में लाकर उसे अमर बना देती है। जैसा वातावरण जैसी वेश–भूषा, जैसी आकृतियाँ और जैसा जीवन मूल्य समय–समय पर प्रचलित होता है, उसके अनुरूप ही चित्रों के विषय, भाव–भगिमा और नख–शिख होते है। इस दृष्टि से भारत की कला में भारतीय नख–शिख, रूप –रंग और चीनी कला में चीन के नख–शिख तथा ईरानी कला में ईरानी नख–शिख का प्रभाव होता है। यही स्थिति बिहार की लोककला मधुबनी की है।

मिथिलावासियों का मानना है कि मिथिला का भित्तिचित्रण, जिसे लोग मिथिला लोक–चित्रकला भी कहते है, की शुरूआत राजा जनक के समय हुई थी। राजा जनक की पुत्री जानकी, जिसको मैथिली भी कहा जाता है, उनको अपना आदर्श मानती आई है। मिथिलावासियों का कथन है कि राजा जनक अपनी पुत्री की जानकी के विवाह के समय श्री राम के स्वागत में सम्पूर्ण मिथिला को चित्रों से सजाने का आदेश दिया था, जो परम्परागत मांगलिक अवसरों पर आज भी महिलाये चित्रित करती आ रही है। अब लोग इसे मिथिला लोकचित्रकला के रूप में जानते है।

जिले के अधिकांश निवासी इसे एकांगी रूप में मधुबनी चित्रकला के नाम से जानते है। परन्तु यह वस्तुतः उत्तर बिहार के सम्पूर्ण मिथिला क्षत्र की कला है। इसे व्यापक अर्थ में मिथिला की चित्रकला कहना अधिक सार्थक होगा। यह कला मिथिला के मधुबनी, दरभंगा, सहरसा और पूर्णिया जिले के समस्त लोक जीवन की कला है।

अध्ययन का उद्द□य

संसार में सुख–सौंदर्य की विविधता ही निराली हैं। जहॉ अपने जीवन को रचाता–बसाता है तथा आने वाले कष्टों से निदान के लिए कहीं दूर न जाकर अपने आस–पास हीं कष्ट को दूर करने का उपाय खोजता है। इन्ही विश्वास से माटी, लकड़ी और पत्थर के देवों की कल्पना करता हुआ आराधना

करता है और कष्ट से मुक्ति पाता है। कालान्तर में यही परम्परा रूढ़ होकर सार्वभौम हो जाती है जिसे सारा लोक, पूरे सौन्दर्य के साथ मनाता तपाता है।

''जिसका न कोई आदि और अन्त है जिसका कोई समय निर्धारित नहीं है। जिसकी कथा प्रसिद्ध है। जिसका जन्म समाज सेवा के लिए हुआ था उसका नाम राजा सल्हेस है।'' राजा सल्हेस की कोई उपेक्षा हुई हो हमें ज्ञात नहीं वे निर्मल स्वभाव के है।

राजा सल्हेस के समय से पूर्व मिथिला एक विशाल राज्य था। इसका नाम विदेह था। विदेह, जनक को कहा जाता है। विदेह राज्य की राजधानी जनकपुर थी। विदेह का राज्य पूरब में बंगाल से लेकर पश्चिम में नारायणी (गंडक) तक तथा उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण में गंगा नदी तक फैला हुआ था। यह क्षेत्र अधिकतर जगलों से भरा हुआ था। विदेह अर्थात जनक के वंशज जब कमजोर हो गए तो मिथिला छोटे–छोटे सामन्तों के राज्यों में बंट गया।सल्हेस के समय में इन राज्यों में तरेगना, बराटपुर, पकड़िया, बाघगढ़ आदि प्रमुख राज्य थे।

राजा सल्हेस की राजधानी महिसौथागढ़ है, जा इस समय नेपाल की पूर्वी सीमा से लगभग 24 किलोमीटर पश्चिमतथा भारत नेपाल सीमा से 18 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यहाँ कंचनगढ़ नामक स्थान था, जो कि अब केवल अवशेष के रूप में देखने को मिलता है, उस समय काफी प्रसिद्ध था। यह स्थाना तीर्थधाम के रूप में प्रचलित है। यहाँ से लगभग 4 कि0मी0 पश्चिम में मानिकढह नाम सरोबर है, जिसके पास की उनकी सार्वजनिक सभा–भंडप था। यही से लगभग 10 कि0मी0 उत्तर–पश्चिम उनकी फुलवारी थी।

राजा सल्हेस के संबंध में कोई मानक पुस्तक किसी लेखक के द्वारा नहीं लिखी गई है। मूलतः यह लोककथा, जो मिथिलांचन एवं नेपाल के तराई भागों में अत्यधिक प्रचलित है। भिन्न स्थानों पर कथा का स्वरूप बदल जाना मूलतः स्वभाविक है।यही कारण है कि सल्हेस की उचित काल गणना नहीं की जा सकती है। किन्तु इनके उपर लिखे गए अनेक नाचों जो सैकड़ों वर्षों से नेपाल एवं मिथिला में पिछड़ी जातियों के द्वारा प्रस्तुत किया जाता है। इससे यह स्पष्ट होता है कि सल्हेस जनमानस में व्याप्त थे। सल्हेस छठवीं या सातवीं शताब्दी के सामाजिक परिवेश में व्याप्त थे।लोगों के बीच जादू–टोना का प्रभाव अराजकता की स्थिति गुप्तकाल की समाप्ति पर अपने चरम सीमा पर थी। छोटे–छोटे सरदार अपने को राजा मान बैठे थे। जातिवाद का दुष्प्रभाव बहुत बढ़ा हुआ था। यह गुप्तकाल की समाप्ति की स्थिति है, जो सल्हेस की स्थिति से मिलती जुलती है।

सल्हेस के समय कामाख्या (जो वर्तमान में असम के कामरूप जिला में है तथा गोहाटी के बगल में है) यह मंदिर योगिनियों के साधना का प्रमुख केन्द्र था। यह उस समय में तरेगना राज्य के अंतर्गत था। कुसमा महेश्वर भंडारी की लड़की थी तथा यहीं पर बारह वर्ष तक माला बनाकर नित्य कामाख्या को चढ़ाती थी। इसी कारण से उसका नाम कुसमा मालिनि पड़ गया था उसकी शिष्या मालिनि कहलाने लगी।

सल्हेस की शासन प्रणाली विचित्र थी। वह सम्पूर्ण मिथिलांचल को प्रजातांत्रिक राजतंत्र बना दिये थे। सभी जातियों के एक–एक प्रमुख की एक सभा की जाती थी। उस सभा के निर्णय के अनुसार ही राज्य का कार्य होता था। प्रत्येक गाँव में एक–एक गरूहर बनाया गया था। इसमें सल्हेस स्वयं कुसुमा मालिनि के साथ एक–एक दिन जाते थे तथा उस गाँव के लोगों की समस्या एवं बीमारी का निदान करते थे। लोगों के आपसी झगड़ों को वे सुलह कराकर प्रेम से रहने का संदेश देते थे। उनका शासन एक आदर्श शासन था।

सल्हेस के समय मिथिला में कई धार्मिक सम्प्रदायों का अभ्युदय हो गया था। शाक्त, शैव, बौद्ध आदि। किन्तु यहाँ मूलतः लोग शाक्त और शैव मतावलम्बी थे। पश्चिम में सीता का जन्मस्थान होने के कारण जनकपुर एव सीतामढ़ी का क्षेत्र शाक्त था तो पूरब में महायोगिनी कामाख्या की गुफा के कारण वहाँ के लोग शाक्त थे। उत्तर में पशुपति नाथ का मंदिर, मध्य मिथिला में कपिल मुनि द्वारा स्थापित कपिलेश्वर, जो मधुबनी के पास है। आदि शिव का महापूजन स्थल था, इस कारण लोग शैव थे। किन्तु ये सभी मंदिर उच्च जाति के लोगों क लिए थे।उनमें उस समय सामान्य जाति के लोगों का प्रवेश भी वर्जित था। इसका मूल कारण था कि उसी समय में मिथिला के नैमिषारण्य में वैदिक–धर्म अपना प्रभाव बढ़ा रहा था। वह उच्च जाति को प्रश्रय दे रहा था।

सल्हेस ने इन सभी धर्मों को एक सूत्र में बांधने का प्रयास किया। इसी कारण से मिथिलावासी राजा सल्हेस को देवता के रूप में मानते है। खासकर दुसाध जाति के लोग। उस समय में शक्ति एवं शिव की पूजा की प्रधानता थी। शक्ति का प्रख्यात मंदिर कामरूप कामख्या, जो आज भी जादू–टोना सीखने के लिए प्रसिद्ध है और उस समय भी था। लोग अपनी मनोकामना पूर्ति के लिए सालोंसाल पूजा किया करते थे। शिवमंदिर तो काफी मिथिला में है, उसमें से पशुपतिनाथ का मंदिर मुख्य है। जातिवाद के कारण छूत–अछूत का भेद–भाव इतना बढ़ा था की लोग अछूतों के हाथ का कोई सामान प्रयोग में नहीं लाते थे, और न ही उच्च जाति के लोग अपने पूजा–पाठ में छोटी जाति के लोगों को सम्मिलित करते थे।

इन्हीं सब कारणों से मिथिला के निम्न जातियों के लोगों का विश्वास राजा सल्हेस के प्रति बढ़ता गया और हर शुभ कार्य की शुरूआत राजा सल्हेस के जयघोष से करते थे। ऐसा करने से उन्हें यह विश्वास होता था कि वे अपने कार्य में सफल होगें। दुसाध जाति के प्रत्येक टोला में राजा सल्हेस का गहबर देखने को मिलता है। जिसकों 'सल्हेस थान' भी कहा जाता है। आज भी इन गहबरों में सल्हेस की गीत के साथ अन्य देवी–देवताओं के गीत गाए जाते है।

मिथिलांचल के भित्तिचित्रण में शूरवीर समाज के सहायक रक्षक एवं देवता का भित्तिचित्रण अधिक किया जाता है। जहां तक सल्हेस के भितिचित्रण का प्रश्न उठाता है, उसके विषय में यहां यह कहना अत्यावश्यक प्रतीत होता है की सल्हेस मात्र राजा नहीं थे उन्हें मिथिलचंन वासी लोक देवता के रूप में उनकी पूजा करे थे। सल्हेस का आज भी लोकदेवता के रूप में मिथिलांचन में पूजा किया जाता है। वहां पूजा स्थान गहवरों में आज भी पूजा करने वाले के शरीर पर सल्हेस की शक्ति आती है। ऐसी मान्यता है सल्हेस के भितिचित्रण के कई प्रमुख कारण है–

1. सल्हेस अपनी प्रारंभिक अवस्था में घर से भाग कर जंगल चले गए थे। जंगल निवास के समय वहीं उन्होंने शारीरिक शक्ति का अत्यधिक संचयन किया। इस क्रम में कई बार जंगली जानवरों से काफी मल्ल युद्ध करना पड़ा, जिसमें जानवर पराजित हुए। यही कारण है कि मिथिलांचन के भितिचित्रों में सल्हेस का जानवरा से युद्ध करना, सल्हेस को देखकर जानवरों का भाग जाना तथा जानवरों का सल्हेस की अधीनता स्वीकार कर उनके चारों तरफ जमा रहना इत्यादि रूपों में चित्रित किया जाता है।
2. सल्हेस के पूर्वज गाय, भैस का पालन किया करते थे सल्हेस जंगल जाने से पूर्व गाय भैस चराया करते थ इसलिए इन घरेलू जानवरों के प्रति उनका अनुराग अधिक था और इस प्रकार राजा सल्हेस को भितिचित्रण में पालतू जानवरों के साथ चित्रित किया जाता है।
3. सल्हेस को जंगली जातियों से अत्यधिक लगाव था तथा उन्हें के साथ रहने के कारण उन्हीं जंगली जातियों की सेना बनाई थी। जिसके बल पर आगे कई स्थानों पर उन्होंने युद्ध किया। भितिचित्र में जंगली जानवरों के साथ भी उन्हें चित्रित किया जाता है।

किन्तु अधिकतर भितिचित्रों में सल्हेस राजा के रूप में हाथी पर बैठे हुए दिखलाए जाते है। कई भितिचित्रों में उनके मंत्रिगण भी दिखलाए जाते है। इसके अतिरिक्त सल्हेस के प्रेम प्रसंग के भी कई भितिचित्र देखने को मिलते है। जैसे सल्हेस के विवाह का भितिचित्रण, कुषुमा के साथ सल्हेस के प्रेम प्रसंग का चित्रण आदि प्रमुख है। सल्हेस महिसौंथा के राजा थे। उस समय महिसौंथा राज्य माहेत्तरी और मोररग (मोरंग) का मिलाकर था। सल्हेस के पिता यादव वंश के थे। उनका नाम सोमन था। उनके माता का नाम गौड़ी था। पूर्व में यह एक प्रथा थी कि जो व्यक्ति चोर या उदंड होता था तथा जिसे समाज सामाजिक बंधन में बांधकर नहीं रख पता था उसे समाज में निष्कासित या बहिष्कृत कर दिया जाता था तथा उसे दुस्साध्य कहकर संबोधित किया जाता था। इन बहिष्कृतों के साथ समाज वैवाहक आदि संबंध नहीं रखता था। इन्हें इसी दुससाध्य समाज में वैवाहिक संबंध आदि करना पड़ता था। इसी कारण से यहसमूह एक जाति दुस्साध्य (दुसाध) का रूप ले लिया जिसका अपभ्रंश अब दुसाध है।

पूर्व में दुसाध कोई जाति नहीं थी, इसका प्रमाण राजभाषा विभाग की एक पुस्तक में भी देखने को मिला। इसमें लिखा है कि – अकबर से युद्ध में जब महाराणा प्रताप हार गए तो महाराणा प्रताप के कुछ सैनिक अकबर की अधीनता स्वीकार नहीं कर जंगल में भाग गए। आगे चलकर ये सैनिक अचानक अकबर के राज्य में कहीं हमला कर देते थे तथा लूट–पाट मचाकर भाग जाते थे। अकबर के सैनिक अथक प्रयास के बावजूद उसे वश में नहीं कर सके अर्थात साध नहीं सके तो उसे दुसांध की संज्ञा दे दी। दुसोंध अरबी शब्द है जो इस बात को प्रमाणित करता है कि जिसे साधा नहीं जा सके इसके लिए यह शब्द व्यवहार किया जाता है। अतः दुस्साध्य और दुसोंध शब्द का ही अपभ्रशव रूप दुसाध है।

इस विषय में श्री रोहिणी रमण झा लिखित काव्य नाटक 'राजा सल्हेस' में भी इसका उल्लेख निम्न प्रकार है।

''के दुसाध कहतौ तोरा, तू छें दुस्साध्यक वंशक।
तेहू ओहने वीर बनै, छौ जन्म जन्म जेहन के अंशक''।

अर्थात कौन तुझे दुसाध कहेगा अर तुम तो दुस्साध्य के वंश के हो। तुम भी वैसा ही वीर बनों, जिसके अंश से तेरा जन्म है।''

''छीन ले सवहक नीन चैन,
तू सीखे आहने चोरि।

अर्थात तुम वीर बनकर ऐसा चोरी सीखो जिससे उस समाज का जो तुझे दुसाध कहता है, उसका नींद और चैन छीन ली।''

उपर्युक्त कथन से यह स्पष्ट होता है कि समूह वाचक दुस्साध्य को ही दुसाध की जाति वाचक संज्ञा दी गई ह।

सल्हेस के बचपन का नाम शैल था। शैला शब्द शैल अर्थात पहाड़ का रहने वाला। किन्तु मिथिलांचल में शैला शब्द बलवान शेर के लिए प्रयुक्त होता है बचपन में ही शैला के जिन्दगी में एक मोड़ आया जो उसे सामान्य व्यक्तित्व से उपर उठने का साधन बन गया। बचपन में शैला कुछ बच्चों के साथ खेलने के लिए गया। किन्तु उसे दुसाध कहकर भगा दिया गया। शैला इस बात की शिकायत अपने पिता सोमन से करता है। किन्तु शैला ने कहा कि वह महान राजा बनकर अत्याचार मिटाएगा। सोमन इस बात पर उसे हँसकर झिड़कता है तथा उसे भैंस चराने के लिए जाने को कहता है। किन्तु शैला भैंस चराने से इनकार करता है तथा घर छोड़कर जंगल में भाग जाता है। उसकों कई दिन भूखा प्यासा रहना पड़ा किन्तु उसक मन में प्रतिशोध की भावना जलती रहती है। क्योंकि उसने पिता को जो बात कही थी जिसका श्री रोहिणी रमण झा के नाटक राजा सल्हेस में इस प्रकार दिया गया है–

''हं–हं देखिहक चैन कोना नौछोटका सब
पावेछे जाति–पाति के बात कोना के, हवा में उड़ियावै छै।
'नै–नै आव ने हम फेरो सं महिस चरावए जेब'

हमरा मुँह सं जे निकलल अधि कडकड सेह देखै'।

यह प्रतिज्ञा का शब्द राजा बनने की तीव्र ललक को अपने मन में रखते हुए जंगली जातियों से सम्पर्क कर शैला ने शस्त्र चलाना सीखा जानवरों से लड़ना एवं प्रेम करना सीखा तथा अढ़रन–ढ़रन शिव की आराधना सीखा। ''जै–जै–जै–जै शंकर जै–जै–जै मलयंकर हमरा में आई अपन, शक्ति के उगावह तू।– अर्थात वह शंकर जैसा ही वीर एवं समान–दृष्टा बनने का बरदान मांगा करता था और हुआ भी ऐसा ही। जवान होने पर शैला एक महान वीर बन गया। सर्वप्रथम शैला ने तत्कालीन बराटपुर के राजा वराट से युद्ध किया। राजा को हराकर उनसे वचन लिया कि उसके राज्य में किसी निर्बल पर कोइ अत्याचार नहीं होगा। उसने सत्यवती से अपनी शादी का प्रस्ताव रखा तो राजा ने सत्यवती की शादी किसी अन्य राजकुमार से करने की बात की। शैला ने उनसे छः माह का समय ले लिया। इसी बीच भूटान देश के नरेश सुयोंक ने तरेगना राज्य पर चढ़ाई कर दी। तरेगना के राजा महीसर थे। उनकी चार बेटियाँ थी जिसमें कुसुमा अत्यंत सुन्दर थी। कुसुमा कामाख्या देवी को माला बनाकर चढ़ाती थी। इसी कारण से लोग उसे कुसुमा मालिन की संज्ञा से संबोधित करते थे। सुयोंग ने इसी कुसुमा से शादी करने हेतु तरेगना पर आक्रमण किया था। महीसर ने अपने परिवार को जंगल में भगा दिया था। शैला महीसर को बचाने जब तरेगना जा रहा था तो रास्ते में जंगल में उसकी कुसुमा से मुलाकात होती है तथा वहीं पर उसे अपना बचपन का दोस्त अन्हार माठ और भगिना करिकनहा से मुलाकात होती है।शैला इससे बहुत प्रसन्न होता है।तरेगना जाकर वह सुयोंक को हराता ह तथामहीसर के तरेगना को भुट्टान के अधीन होने से बचा लेता है। यह सलहेस की पहली मातृभूमि के प्रति अगाध भक्ति थी। क्योंकि महिसौंथा उस समय तक तरेगना के राज्य का ही एक अंग था। महीसर कृतज्ञ होकर शैला के प्रति राजा शब्द का प्रयोग करते है।इस प्रकार शैला उनसे निवेदन करता है कि मैं राजा नहीं हूँ, आपकी ही एक प्रजा हूँ। महीसर शैला के विनम्र व्यवहार से और अधिक प्रसन्न होता है तथा महोत्री एवं मोरंग जो तरेगना का अंश था, वो शैला को देकर शैला से राजा शैलेश बना देता है। उसके उपरान्त ही शैलेश महिसौंथा म अपना गढ़ (किला) बनाते है। चंपावन को अपना बगीचा बनाते है और एक चकरा नदी को बाँध कर बहुत बड़ा तालाब मानीक दाह बनाते है। इसके बाद बराटपुर जाकर सत्यवती से शादी करते है।

राजा होने पर शैलेश अपने छोटे भाई मोतीराम को मंत्री बनाते है तथा बचपन के मित्र अन्हारमाठ को सेनापति नियुक्त करते है। भगिना वनसप्ति का बेटा करिकन्हार सदा उनका सहायक रहता है। शैलेश अपने को कभी राजा घोषित नहीं करे है तथा अपने राज्य को प्रजातांत्रिक प्रणाली से चलाते है। उन्होंने प्रत्येक गाँव में एक सामूहिक भवन बनवाया जिसे गरूहर कहा जाता था। गरूहर शब्द मैथिली भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ है कष्ट हरने का स्थान। मैथिली में गरू का अर्थ कष्ट होता है और हर अर्थात हरण। शैलेश कष्ट को सुनते एवं उसका निवारण करते थे। गरूहर में बीमारों का उचित उपचार भी होता था और आपसी झंझटों का फसला भी। शैलेश द्वारा इन गरूहरों में जितने भी झगड़े होते थे उनके दोनों पक्षों के लोगों का आपस में शैलेश के द्वारा सुलह करा दिया जाता था। मैथिली में सुलह शब्द को सलाह कहते है। शैलेश के इसी सुलह प्रक्रिया के कारण लोग उन्हें सल्हेस कहने लेगे।

सल्हेस शब्द की संधि–सलाह+इस = सलाहेस होता हैं। जिसका अपभ्रंश सल्हेस हो गया।

सल्हेस के विषय में कोई ऐतिहासिक प्रमाण प्राप्त नहीं है। ये लोक–देवता थे। लोक–देवता का कोई इतिहास नहीं होता है। उनकी लोक–कथा एवं लोक–गाथा होती है। सल्हेस के विषय में कई प्रकार की लोक–कथाएं एवं लोक गाथायें सुनने को मिलती है।

निश्कर्श

स्व0 मणिपद्म के अनुसार सल्हेस न लोकहित, राज्यहित, मिथिलाहित एवं देशहित के लिए काम किया है। कुसमा मालिनि के अमोघ औषधि ज्ञान एवं अपने शस्त्र ज्ञान एवं क्षमादान के अलौकिक गुणों के कारण वे जीते जी देवता स्वरूप हो गए थे। वे अन्त में मृत्यु को प्राप्त करते है या अंतर्ध्यान होते है, इसकी चर्चा कही नहीं है। मिथिलावासियों का कथन है कि सल्हेस सादा जीवन एवं उच्च विचार के थे। मिथिलांचल पर उपकार एवं उद्धार के बाद वे निश्चित रूप से छद्म भेष में दूसरे प्रान्तों के लोगों की सहायतार्थ चले गए।

वर्तमान स्थिति तक जितनी भी पुस्तकें या दन्त–कथायें उपलब्ध है उनमें सल्हेस की इससे अधिक अंतिम स्थिति का कोई जिक्र नहीं है। किसी–किसी दन्त–कथा में यह कहा गया है कि सल्हेस यहीं से अंर्तध्यान हो गए। जहाँ तक मेरी मान्यता है कि सल्हेस लोकदेव थे जिसे मनुष्य देव भी कह सकते है। मिथिलांचल में इसके लिए 'मनुष्यदेवा' शब्द प्रचलित है। सामान्यतः मनुष्य अर्न्तध्यान नहीं होता ह। सल्हेस निश्चित रूप से अर्न्तध्यान नहीं हुए होगे। मुझे लगता है सल्हेस लोकोपकारी थे। अतः लोकोपकार हेतु मिथिलांचल से बाहर चले गए। यही कारण है कि आगे की चर्चा उपलब्ध नहीं है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

''सल्हेस लोकगाथा'' सम्पादन महेन्द्र नारायण राम फूलो पासवान–पृ0सं0–

''राजा सल्हेस' लेखक–रोहिणी रमण झा, चेतनासमिति विद्यापति भवन, पटना।

राजा सल्हेस (ऐतिहासिक उपन्यास), मणिपद्क।

जय राजा सल्हेस (महाकाव्य) श्रीमती नाथ मिश्र मैथिली अकादमी, पटना।

'मिथिला की भिति–चित्रण परम्परा का अनुशोलन (राजा सल्हेस के कथा का चित्रण के विशेष संदर्भ में) शोध प्रबंध शोधार्थी राखी कुमारी।

''मिथिला राज्य एक ऐहिहासिक तथ्य''–डा0 शिव कुमार मिश्र सावित्री प्रकाशन, पटना।